# बार्नी का घोड़ा

सिड हॉफ

हिंदी: छाया भदौरिया

तबड़क! तबड़क!
शहर के सभी बच्चे इस आवाज़ को पहचानते थे। यह बार्नी का घोड़ा था जो सड़क पर चला आ रहा था।
फेरीवाला बार्नी प्रतिदिन अपनी बग्घी से फल और सब्जियाँ बेचता था।
हर दिन बच्चे बार्नी के घोड़े को प्यार से सहलाने और उसे कुछ खिलाने के लिए बाहर आते थे।
एक दिन एक नई आवाज़ आई:
स्क्रीच! स्क्रीच!
यह शहर की पहली ओवरहेड ट्रेन थी, और बार्नी का कोमल घोड़ा दौड़ रहा था!
इस बढ़ते और बदलते शहर में बच्चों को एक पुराने समय के फेरीवाले और उसके घोड़े की यह जीवंत, रंगीन कहानी पसंद आएगी।

# बार्नी का घोड़ा

सिड हॉफ

हिंदी: छाया भदौरिया

बहुत समय पहले घोड़े सड़क पर आने-जाने के लिए बग्घी खींचते थे। उस समय ऐसे घोड़े भी थे जो स्ट्रीटकार भी खींचते थे।

फेरीवाला बार्नी अपने घोड़े और बग्घी के साथ सड़क पर चिल्लाता हुआ चला गया, “सेब! प्याज! आलू!

“सेब ले लो, प्याज ले लो, आलू ले लो।"

महिलाएँ उससे खरीदारी करने के लिए अपने घरों से बाहर निकल आईं।

बार्नी का घोड़ा किनारे पर खड़ा इंतज़ार कर रहा था।

उसने मक्खियों को भगाने के लिए अपनी पूँछ घुमाई। बच्चों ने उसे प्यार से सहलाया। फिर बच्चों ने उसे गुड़ के टुकड़े खिलाए।
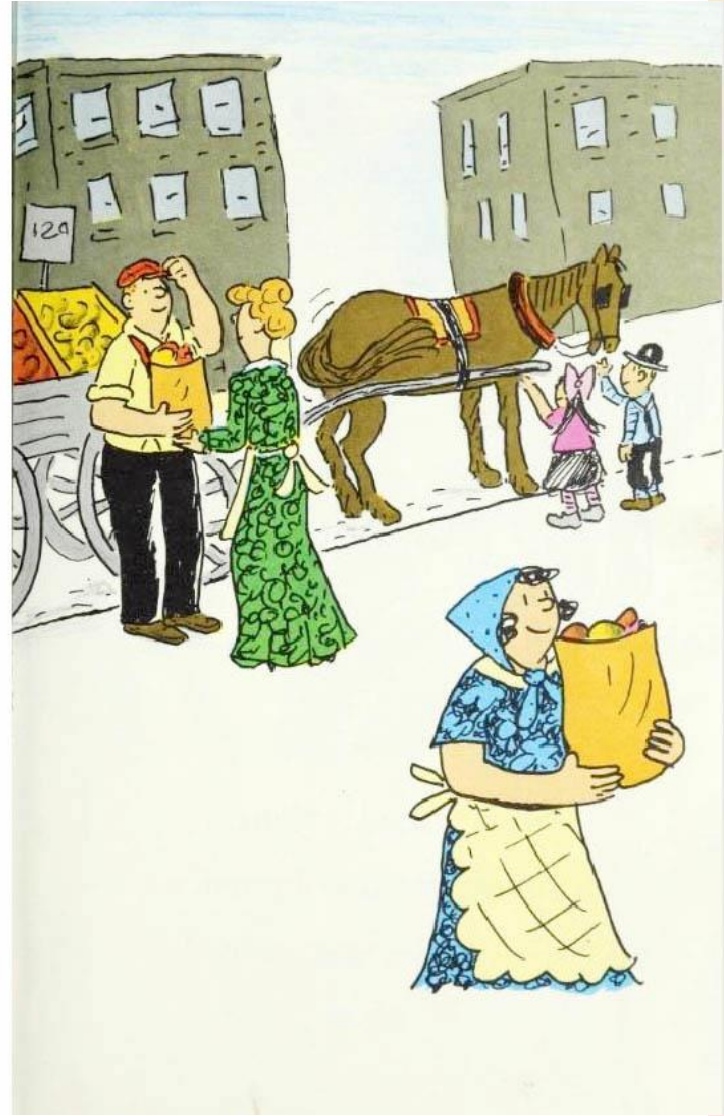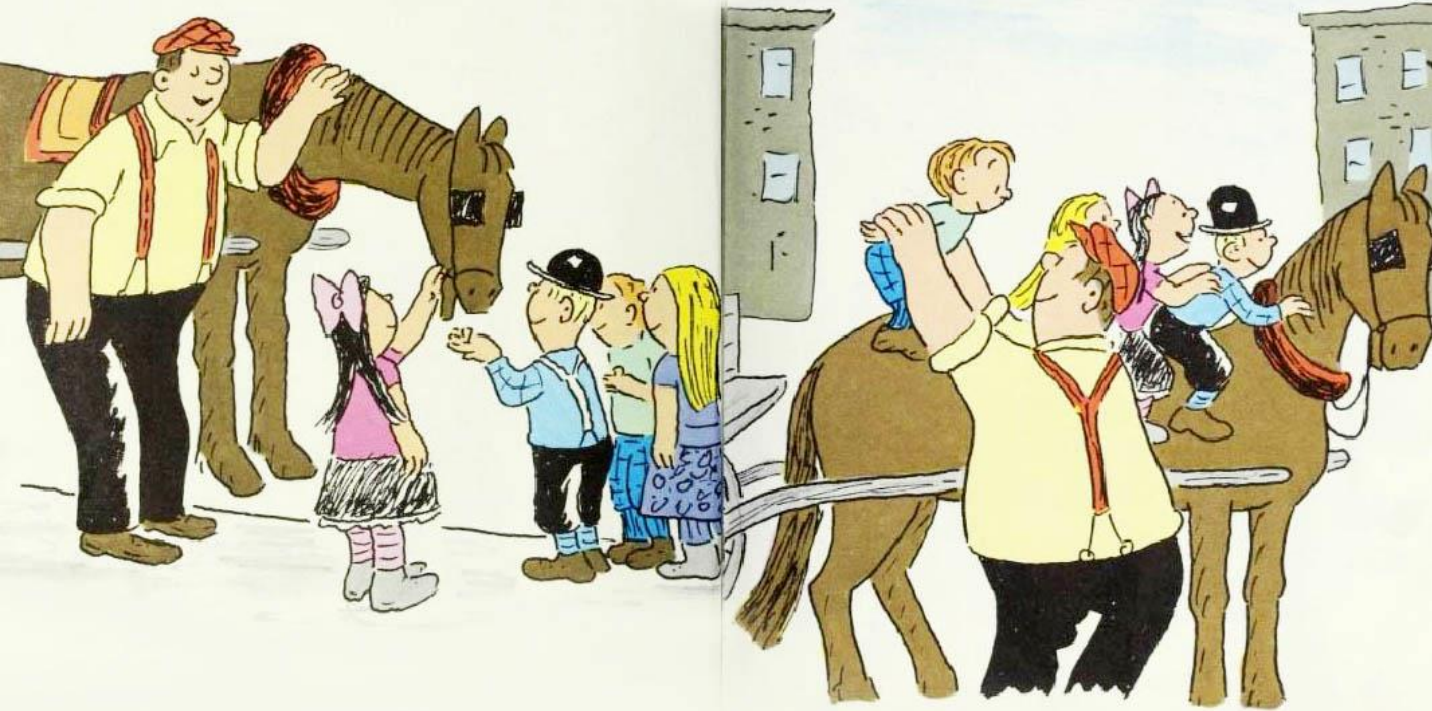
"बहुत अच्छा बच्चो। हमेशा जानवरों के प्रति दयालु रहना चाहिए,'' फेरीवाले बार्नी ने कहा।

बार्नी ने उन्हें अपने घोड़े की पीठ पर बैठने दिया।
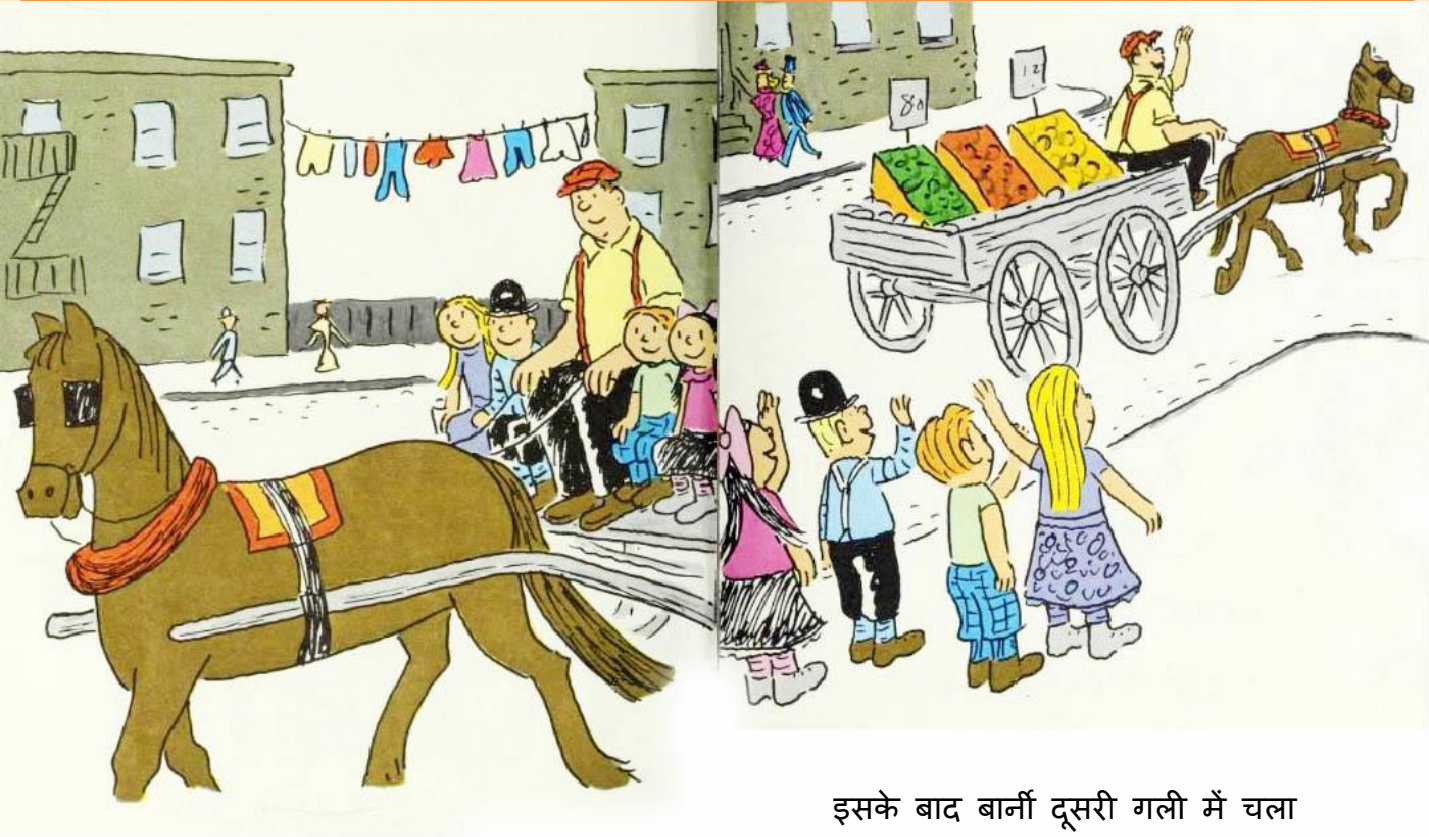
फिर उसने बच्चों को बग्घी पर बैठाकर ब्लॉक के चारों ओर घुमाया।

इसके बाद बार्नी दूसरी गली में चला गया।

"अलविदा, बच्चो," बार्नी ने कहा। "मैं आपसे कल मिलूँगा।"

एक दिन कुछ आदमी गैंती और फावड़े लेकर आए। उन्होंने खुदाई शुरू कर दी। बार्नी अपने घोड़े के साथ किनारे पर रुका और देखता रहा।

अधिकारी मुलदून ने कहा, "जल्द ही लोग हमारे सिर के ऊपर से ट्रेनों की सवारी करेंगे।" बार्नी फेरीवाले ने कहा, "इस शहर को विकसित होना है।" और अपने घोड़े की पीठ पर हाथ फेरने लगा।

बार्नी ने सारा दिन उस कस्बे में फल और सब्जियाँ बेचीं। जब देर हो गई तो लोगों ने सुना:

तबड़क! तबड़क!
जैसे ही बार्नी अस्तबल की ओर वापस गया।

उसने अपने घोड़े पर ब्रश घुमाया और उस पर कम्बल डाल दिया। "शुभ रात्रि, शुभ निद्रा," बार्नी ने कहा।

वह भी अपने घोड़े के बाजू में ही सोने चला गया।
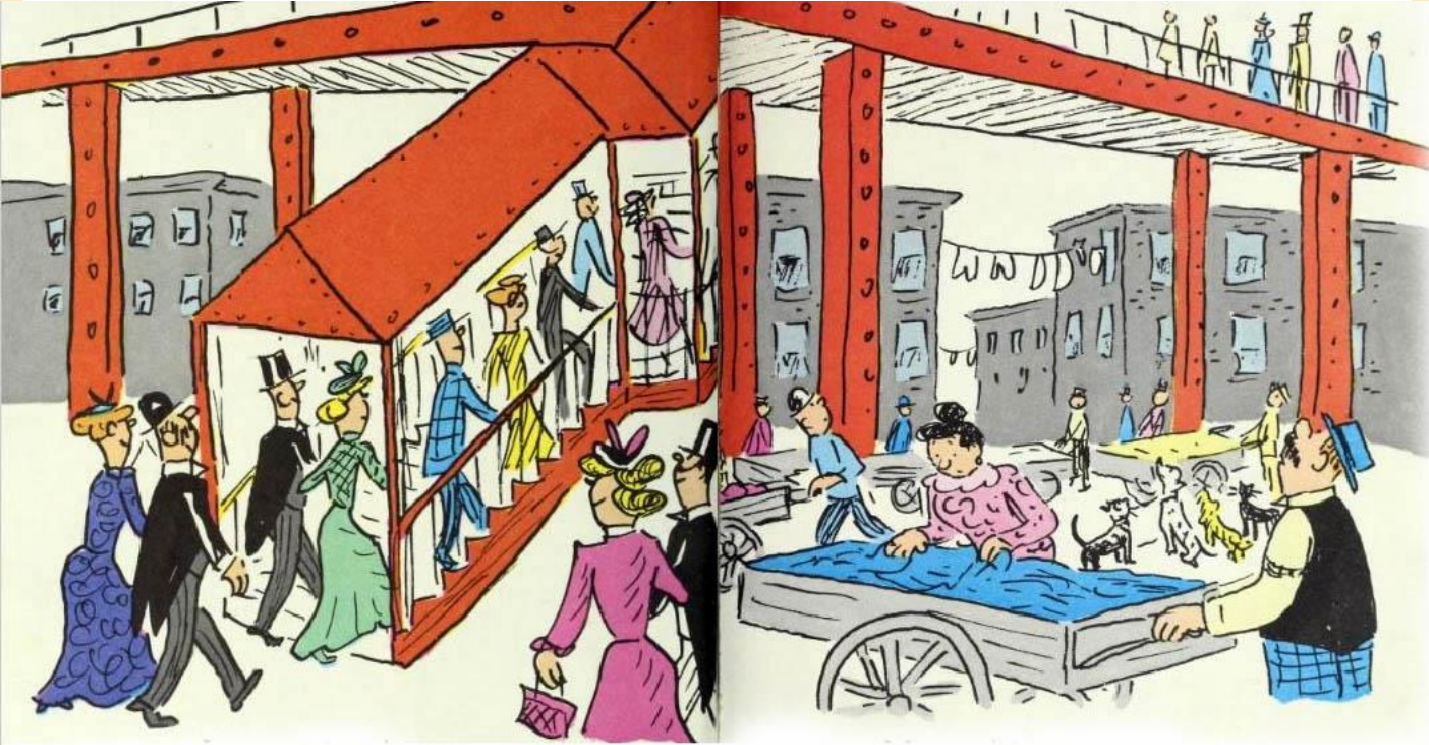
यह वह दिन था जब रेलगाड़ियाँ चलनी शुरू हुईं। लोग रेलगाड़ी में चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ चढ़ते थे।

ठेले वाले लोग उन पर टूट पड़े। कुत्ते और बिल्लियाँ भी उन्हें घूर रहे थे।

स्क्रीच! स्क्रीच!

पहिए पटरी पर चले गए। रेलगाड़ियाँ चलनी शुरू हुईं। धरती हिल गई। "घोड़ा भाग गया!" कोई चिल्लाया। बार्नी का घोड़ा बग्घी को खींचते हुए सड़क पर भाग गया।
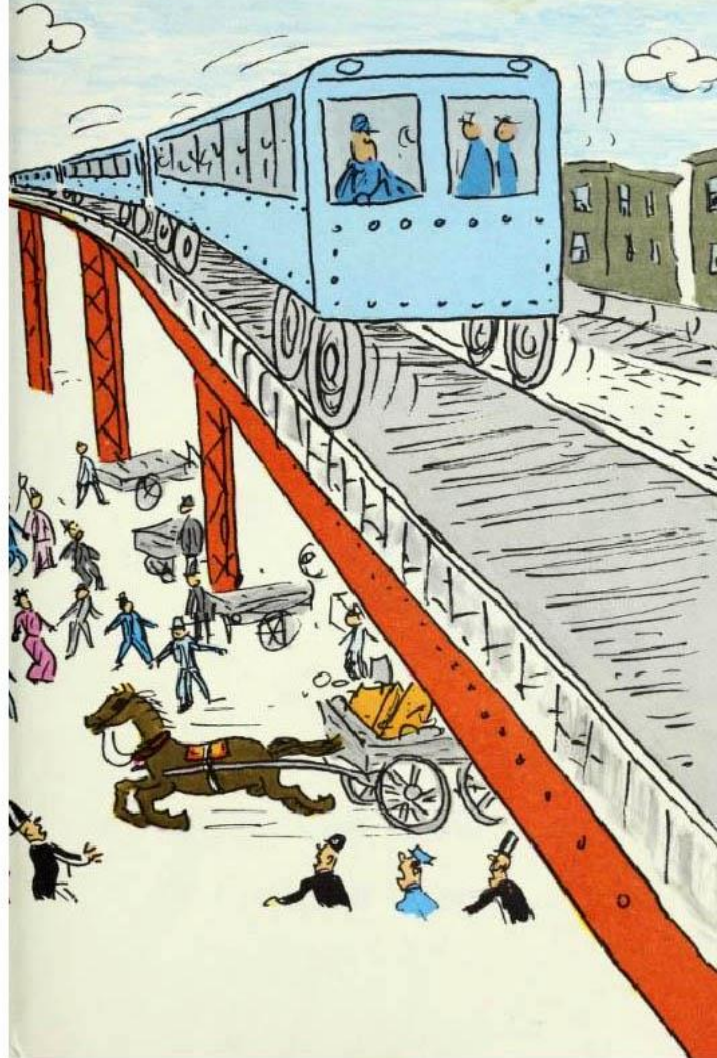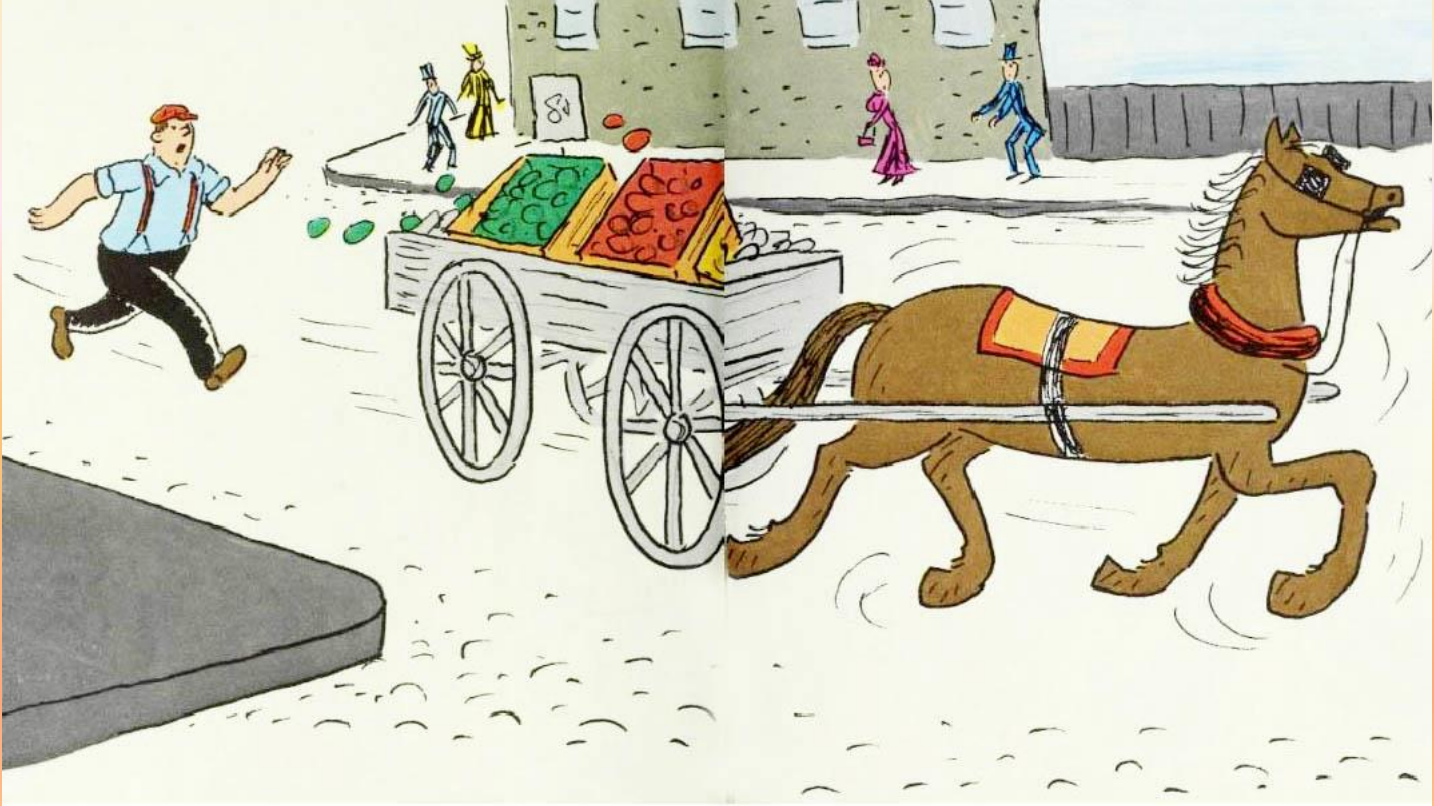
“ओ.....! मेरा इंतजार करो!" बार्नी चिल्लाया।

लेकिन बार्नी का घोड़ा बहुत ही तेज़ दौड़ा।
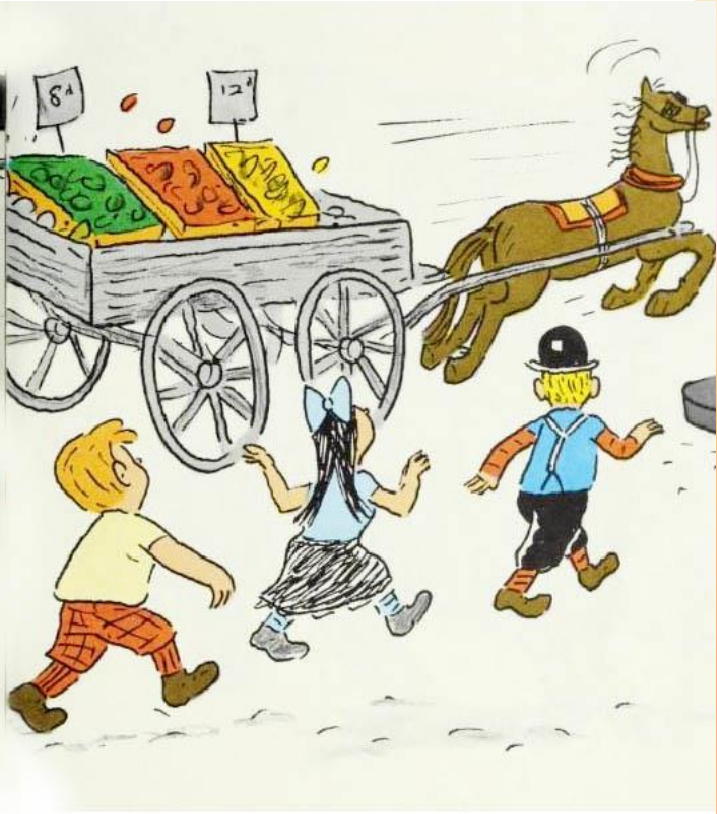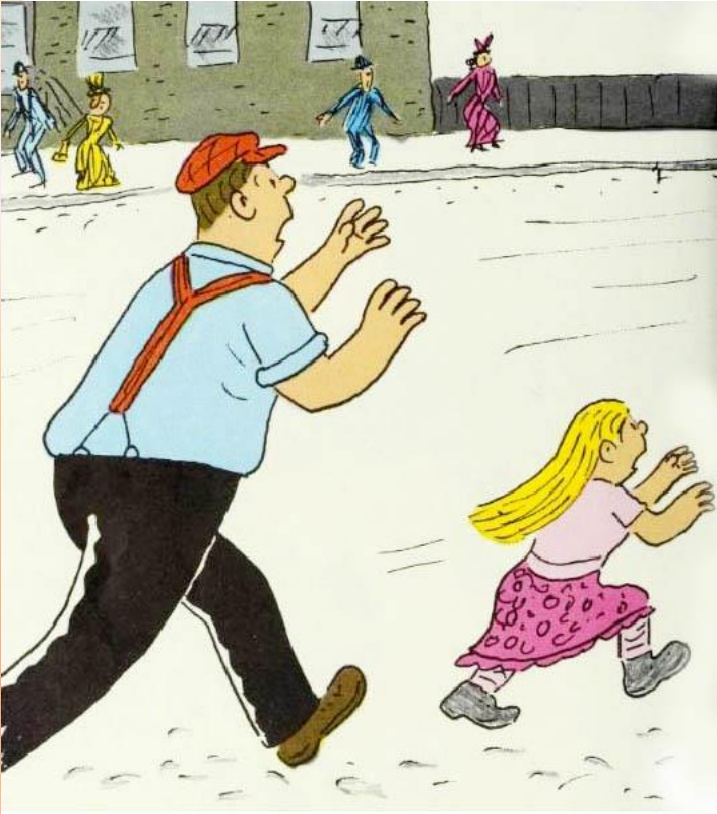
बच्चों ने उसे पकड़ने की कोशिश की।

लेकिन बार्नी का घोड़ा इतना तेज़ दौड़
रहा था कि वे उसे नहीं पकड़ सके।
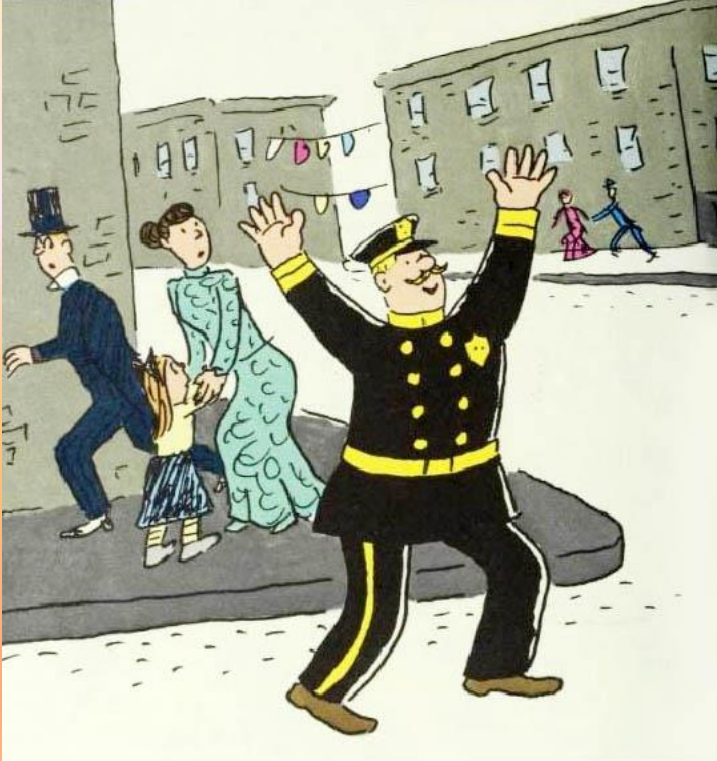
अधिकारी मुलदून ने आगे
बढ़कर अपनी भुजाएँ लहराईं।
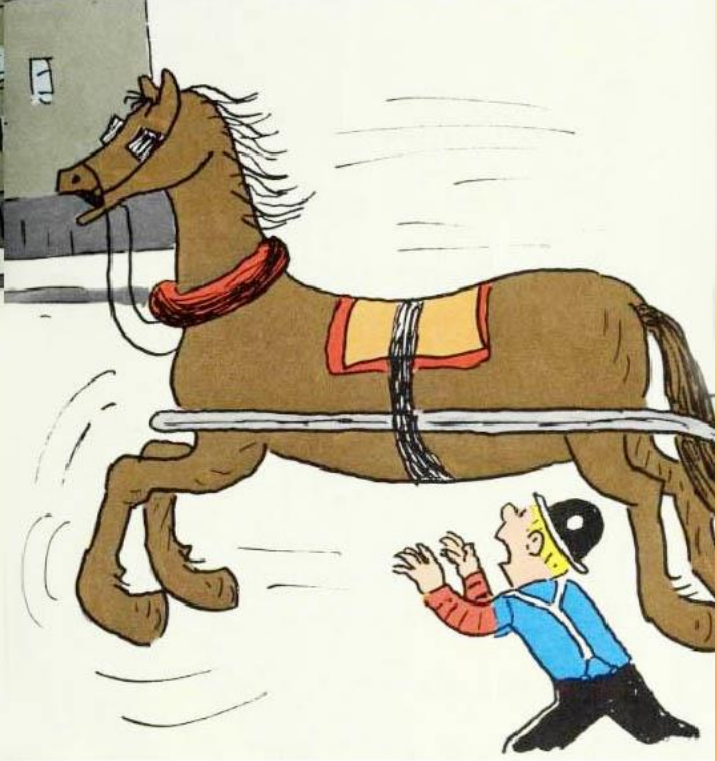
"वाह, बूढ़े आदमी, वाह," उसने धीरे से कहा।

"कोई भी तुम्हें परेशान नहीं करना चाहता।"

बार्नी का घोड़ा रुक गया। उसने पुलिसकर्मी को उसे पकड़कर तब तक सहलाने दिया जब तक बार्नी ने उन्हें पकड़ नहीं लिया।

अधिकारी मुलदून ने कहा, "मुझे लगता है कि आपके घोड़े को ट्रेनों की आदत डालनी होगी।" फेरीवाले बार्नी ने कहा, "हम सभी को उसकी आदत डालनी होगी।"
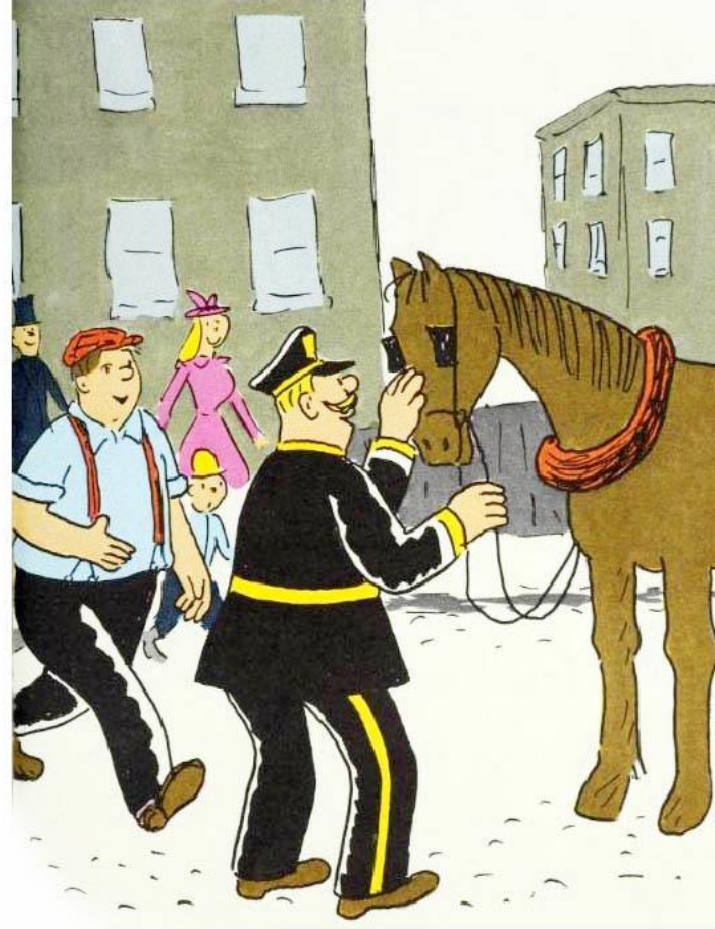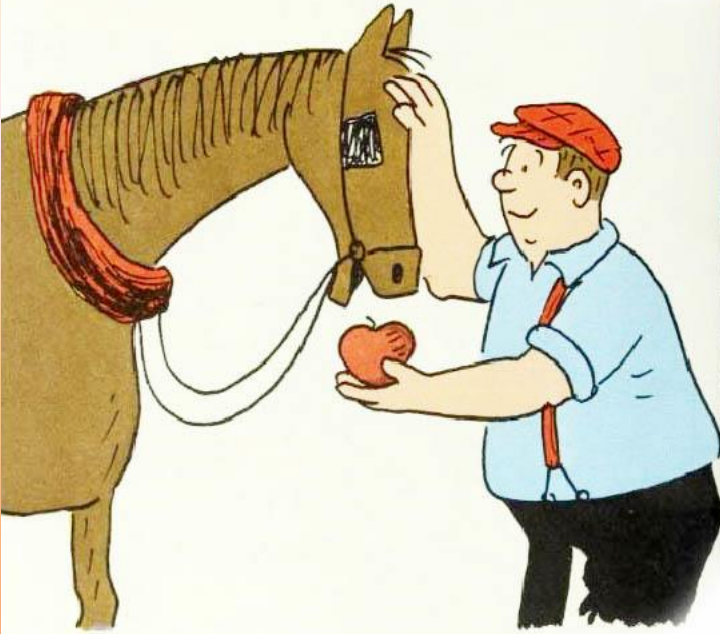
बार्नी ने अपने घोड़े को सहलाया
और उसे एक बड़ा रसदार सेब दिया।

फिर वह बग्घी पर वापस आया और
चिल्लाते हुए चला गया, “सेब! प्याज! आलू!
“सेब ले लो, प्याज ले लो, आलू ले लो।"
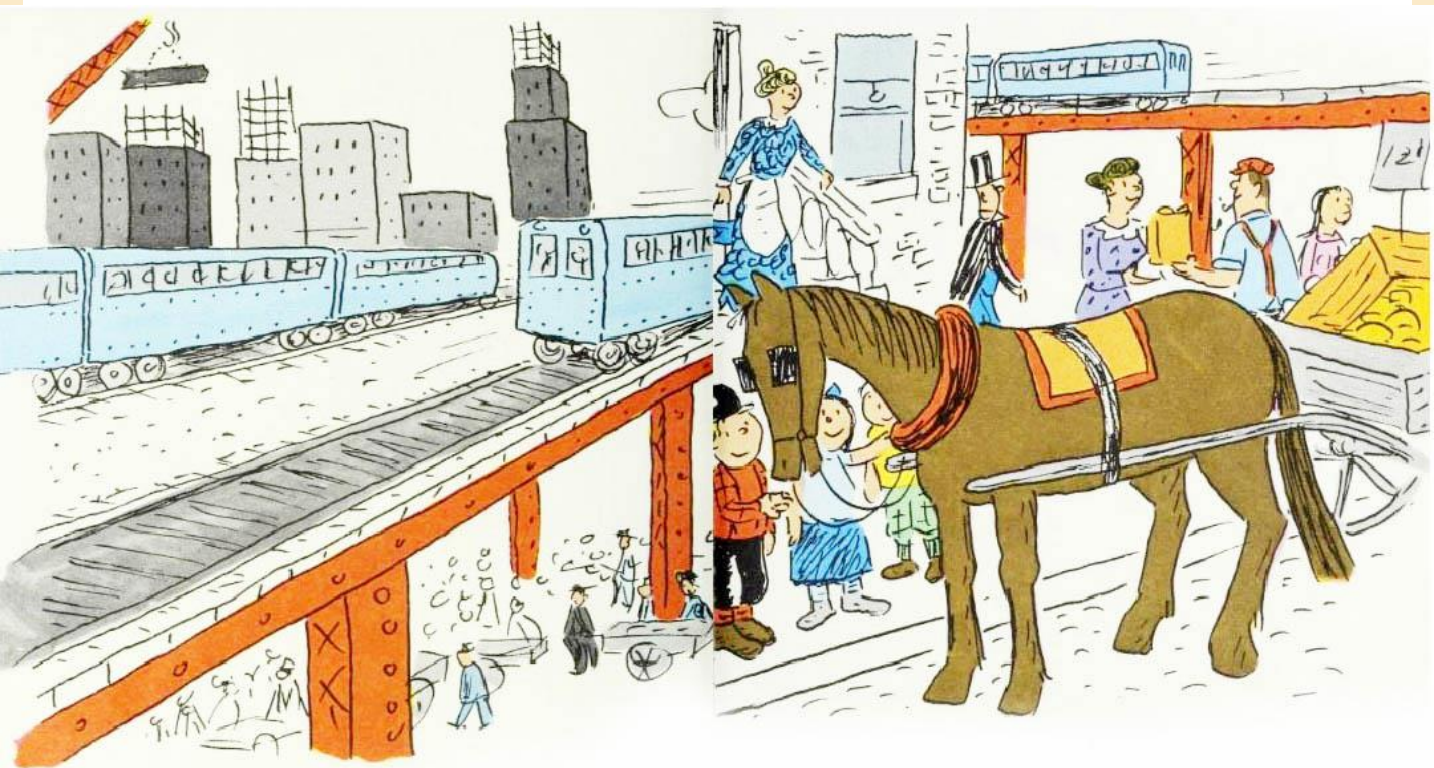
शहर बढ़ता गया और बढ़ता गया। ज्यादा से ज्यादा ट्रेनें चलने लगीं। उनके नीचे की ज़मीन हिलने लगी।

लेकिन बार्नी के घोड़े को कोई फ़र्क नहीं पड़ा। वह फिर कभी नहीं भागा....

शायद कभी नहीं। वह जानता था
कि बार्नी को उसकी ज़रूरत है।